सम्पूर्णता वर्ष

आत्मिक स्थिति – 1

01.06.2014

1.स्वमान – मैं स्वराज्याधिकारी हूँ।

- बापदादा अपने हर बच्चे को राजा बच्चा कहते हैं और भविष्य में भी राजा के रुप में देखना चाहते हैं। इसके लिये बाबा कहते कि अभी स्वराज्याधिकारी बनो क्योंकि अभी जो जितने स्वराज्याधिकारी बनेंगे, वो भविष्य में उतने ही विश्व राज्याधिकारी बनेंगे।

2. योगाभ्यास –

अ. मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ....घण्टे में दो बार अशरीरी होने का अभ्यास करें..।

ब. दिन में कम से कम दो बार अपना स्वराज्य दरबार लगायें और अपने सूक्ष्म तथा स्थूल कर्मेन्द्रियों को श्रीमत अनुसार चलने का ऑर्डर दें। साथ ही चेक करें कि वे आपके आदेशानुसार चल रहे हैं या नहीं ?

स. ऐसी धुन लगायें कि जब हम नीचे देखें तो चारों ओर चमकती हुई आत्मायें ही दिखाई दें और जब ऊपर देखें तो सर्वशक्तिवान ज्ञान सूर्य ही दिखाई दें। इसके अतिरिक्त हमें संसार में और कुछ भी दिखाई न दे।

3. धारणा – आत्मिक दृष्टि

- `जब तुम्हारी आत्मिक दृष्टि नेचुरल होगी तब संसार में नेचुरल कैलिमिटिज शुरु होंगी।`
- `जब तुम्हारी आत्मिक दृष्टि नेचुरल हो जाएगी, तब संसार की सर्व आत्माओं की दृष्टि तुम चमकते हुए चैतन्य सितारों पर जाएगी।` – **शिव भगवानुवाच**

4. चिंतन –

- मैं कहाँ तक स्वराज्याधिकारी बना हूँ ?
- मेरी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियाँ मुझे चलाती हैं या मैं उन्हें चलाता हूँ ?
- सदा स्वराज्याधिकारी बनने के लिये क्या करें ?
- स्वराज्याधिकारी आत्मा के लिये बाबा के महावाक्य ?

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों ! स्वराज्य अधिकारी वह है जो आने सूक्ष्म और स्थूल सभी कर्मेन्द्रियों पर राज्य करता है। हम जितना समय और जितनी पॉवर से अपने कर्मेन्द्रियों पर अभी अधिकारी बनते हैं, उतना ही भविष्य में राज्य अधिकार मिलता है। अगर अभी एक जन्म सदा अधिकारी नहीं बन सकेंगे, तो भविष्य 21 जन्म कैसे राज्य अधिकारी बनेंगे ? तो चेक करें कि मैं सदाकाल का स्वराज्याधिकारी हूँ या कभी-कभी का ? मन मुझे चलाता है या मैं मन को चलाता हूँ ?